



ASHA ARCHIVES

2667

ASHA ARCHIVES



2667

ASHA ARCHIVES

१
ॐ नमः शिवाय ॥ यथा तत्त्वनामुवेन वनसंविद्येत्सागरे निमग्नं जीवमूहमूहं
गुरुपादाविद्यामविद्या ॥ वक्रावुसोपनामहं यमुपनि ॥ कलागवान्कमिन्नः नलोर्ग
हजघादगीगुहमयं नस्थादयमधुतं ॥ ॥ प्रवमयाधुयमकस्मिन्समयहगवान् सर्वनथा
गनकायवाकिरुहदयवज्यागिनिहृगवविहाय ॥ नगुरगवानाह ॥ सर्वनथागनकाय
वाकिरुहदयं हृदयकं गुहानिगुहकनयं ॥ अहवजगर्हसाधुसाधुमहाकृपा महावाधिस

स्वयवजसत्वसत्तासत्वसमहासमयसत्वसहृदयं हवज्जाख्यं नृधू ॥ वजगर्हउवाव ॥ वजस
त्वहवाकस्मान्महासत्वहवकथं ॥ समयसत्वहवकनकथयं हृगवानिपि ॥ हगवानाह ॥ अहयं वजस
त्वकंसत्वं गिरवसंकाता ॥ अनयाप्रहयायूक्तावजसत्व वृत्तिमन्तः ॥ महाहानं रसः पूर्वमहासत्त्वनि
निगद्यनानित्यं सकीदृशः ॥ हगवानाह ॥ विहवपत्तिननासवीग्रकग्रहकवर्हिता ॥ अथवाः
सर्वायायनलवसज्जकलियाभासम्बरहदक्षकथन ॥ अलिकालिवज्रस्यप्रहपायधर्मसः

कृष्णमजीवमयम् ॥ कृष्णमात्रा कर्त्तुं न सृष्टं न वक्ष्यन् ॥ वायुर्वायुं दिसि पृथु विनि कृत्वा न मन
नं लययन् ॥ न स्यात्सुप्तं न धृतं न वक्ष्यन् ॥ कृष्णवजः भग्ननाक्षत्रं न सिनत्रं जानाति यत्नम् ॥ यी
नत्र जाह्नविना लकनवक्ष्यन् ॥ भग्ननाक्षत्रं न सिनत्रं जानाति यत्नम् ॥ यी
वाति भग्ननाक्षत्रं न सिनत्रं जानाति यत्नम् ॥ भग्ननाक्षत्रं न सिनत्रं जानाति यत्नम् ॥ यी
संनयाहुं कृत्वा विना न स्यात् ॥ भग्ननाक्षत्रं न सिनत्रं जानाति यत्नम् ॥ यी

वक्ष्यन् विनि नत्रं ॥ यत्नम् नत्रं ॥ भग्ननाक्षत्रं न सिनत्रं जानाति यत्नम् ॥ यी
वक्ष्यन् विनि नत्रं ॥ यत्नम् नत्रं ॥ भग्ननाक्षत्रं न सिनत्रं जानाति यत्नम् ॥ यी
वक्ष्यन् विनि नत्रं ॥ यत्नम् नत्रं ॥ भग्ननाक्षत्रं न सिनत्रं जानाति यत्नम् ॥ यी
वक्ष्यन् विनि नत्रं ॥ यत्नम् नत्रं ॥ भग्ननाक्षत्रं न सिनत्रं जानाति यत्नम् ॥ यी
वक्ष्यन् विनि नत्रं ॥ यत्नम् नत्रं ॥ भग्ननाक्षत्रं न सिनत्रं जानाति यत्नम् ॥ यी

६

या ॐ लूक ग लूक ययन ॥ ॐ लिमिलिहं ॐ लूक सूर्यययन ॥ धनपासवेनेयसुदेनहसंदर्शयन ॥ ॐ
नयययन ॥ वजागोरीवकरीयवजगादिनीनवालि कीरवरीयवरीयागलूमनादिनकवदनी ॥ मनु
पटलदिनीयः ॥ ॥ दवनापटलं व्यापामः ॥ पथमं लवयत्सनी ॥ दिनियकरुनी विलवयन ॥ लनीयल
वयनमूदिनीउपडीसर्वहापनः ॥ नस्मात्पुनरीपिपथमं नून्यवाविर्दिनियविजसंग्रहं लेनीयविम्वनि
व्यमित्ररुथन्यासमजरा ॥ बहोसूर्यययनविनायकस्मिन्ववाहं हवीविम्ववडी ननेववजनविल

७

वयचपाकारकं पञ्चवचनस्य पथमं लवयत्सनकंधर्मधात्वात्मकां विदुः ॥ यागान् स्यापिरीलि
लाहलूकलीविलवयन ॥ ननः लूकदिनययदहं नरं वंसूर्यमधुलं ॥ मठवहं निवेवपुष्पायस
लयकां रुक्मवर्णमहाधारां कां वजसंहवां ॥ वजपटकमध्याह्नं नलीविलयन ॥ वजजन्ममहाह
पूनात्पदजसन्निहा ॥ नूयवानीलाग्नाहं लवयचंदयावत् ॥ व्यामिरदावकंदल्लवजजन्ममहाह
पं ॥ पूजयदहं विरिः सूर्यसकाविरिः ॥ लोशामगत्वाहं नंधीहोशामहं लुलानं ॥ वहावीवी

हस्तवा॥ शेषसंधर्धिवस्त्रा॥ पूर्वसीवजहस्तवा॥ नवसधवीनया॥ वस्तुलिउमत्रकंवादयन्॥ नगति
 ॥ पूर्वमपुः॥ अंयातिगिनकधनंमहाभागानुगमनः॥ वस्तुलिउमत्रकंवादयन्॥ नगति
 वन्॥ सप्रवसत्यमित्याहः॥ परमानंदस्वरवर्कविसृजनिस्वदहाल॥ गगनमधुलश्रुदकाः॥ संहार्यानय
 हृदययागीधवात्मकारवन्॥ नालाभूतवर्णनत्रकवन्कनगुवान्पि॥ ऊर्ध्वकक्षयमात्र॥ पञ्चमूत्र
 लंकां॥ वकीकृष्टुलकाधिपहस्तवृकमखला॥ यंश्चवृष्टिविशुष्टोवृणामुद्राः॥ पिकिर्हिना॥ कृष्ट

रु

८

शिवाद्युचर्मावर्णाधिरुवर्षकनि॥ वामवज्रकपात्रश्चवृष्टाकवापिवामनः॥ दाडिभरुवज्रश्च
 कावाद्यात्रभात्मकः॥ भग्नानकीउन्ननाथः॥ अष्टयागिनिरीः॥ पवित्रनः॥ नसनीत्यनयायुक्ताभग्न
 नलीविधियन्॥ चतुर्भुजचतुर्मासनिर्झिनविशुद्धिनः॥ पूर्वोक्तवर्णयुद्धकात्रवः॥ प्रथमं वामत्रु
 जननत्रकपालंदवास्तुभग्नकनपूत्रिणं॥ प्रथमंदडिभरुवज्रं॥ नवविशुद्धायापिहृतिदीनः॥
 वज्रवागारिप्रह्लादवद्विपिनी॥ सहजंविमूर्षवामवज्रकदाडिभरुवज्रभूतः॥ प्रथममूर्खनीवनगं

६

पूर्वाकवर्षुपुंउजाख्यंषद्यामिनाविशीद्विः॥यथमवामउजाविशुतंवामदिनीयउअद्यधुदीउक्षि
 नायउअकलिः॥अथदिउजाख्यंवजश्वतासमाययायधनरगवाननधनपुहसयात्रयकलिकपा
 रंअधुकात्मकमनकाकाःनःसर्वनथगनकायवाकिरुदवजदवनायटलसुनायः॥ ॥दवनादि
 यकपटलंयास्यामः॥सुदीदिवीजाडमीनिअर्थकसुदीफनयाकुंभाकात्रयाअधुकावविस्
 नान्वृक्षानाकृष्यासुमाहतिःसंप्रक्षान्नाथन॥उंअहिरिषिअनुमीसर्ववजुनथागनाः॥अथवृ

६

ह्रस्वाकारयुःपक्षमनाहः॥यक्षनथागनात्मकःकलविःपक्षरिंविंयन॥अहिरिषिचमान
 पूषाविरुवनि॥द्वंद्वरिगदउट्टीकिंकुमदीरुवनि॥यवजादिहःसंप्रक्षनवजगीत्यालावना
 दिहिनायन॥अहिरिषिचमानामुष्टिरुक्तुआहवनि॥अननरुकांनिधनः॥यिसंक्षाधिसुनल
 वनालायाहिसु॥दवनामूर्त्तिसुनयं॥अहिरिषकपटलसुउयः॥ ॥अथनलपटलयास्यामः॥
 स्वरूपननासिपुंनदधुवनअधानापिअनावनगंअनापिधानावनरसानापिपसकानसः॥

नापि स्यात्तन्मन्त्रं नापि चैतिकां जननी ह गिनी चैव पूजयद्वागीवि ॥ नदी त्रय को न भवती च धुलो वा क्र
 मा न भवति ॥ यद्वा पाया विधमन पूजयन्त्ववसुतथा स विनयाः प्रयत्न नय भवतु दान जायते ॥ अमुक क्रिय न द
 ० त्वं वा उवा गीति स वरी ॥ मृदा यं कुरु नाना कथं न मा ऊरु उ ना ॥ वजन मृद नाना दि ॥ मृज न नाति
 धाय न ॥ वज्र यद्रं न भव कर्म न भव गं वल न भव च ॥ कृत्वा निषेध विधाना रु ॥ उह मा निम हा क प ॥ वज्र अति
 ह वत्स जाय द न ही न ये व च कर्म वज्र को स मा र्वा ना वा क्र मो य न भव गि ॥ वल न य धु ति ना रु या ॥ य क मृज

१०

विनिश्चिना न भव गानां कृतं चैव न संजय मति धाय न ॥ न भव गानां गनः प्रामा ना ग न भव न ये व च ॥ अ न
 या य ह्या य कृत्वा न भव गानां ति धिय न ॥ कृत्वा निषेध विधाना रुः संजय म उ य कृ धा ॥ य धु ति विधं या नि का
 य वा कि रु द न ॥ कृत्वा नां पं कृ त न म नु द वो न निः प्र प कृ त्वा व नः ॥ वे ना च ना कृ त्वा मा ध व त्वा ना ति क
 सा चि क ॥ व क्रा वि कृ ः जि वः सर्वा वि वृ षं न त्व मृ च न ॥ व क्रा नि र्द मि ना वृ षः ॥ वि ष ना दि कृ त्वा न भि व स
 दा त्र क र्वा म न ॥ सर्वः सर्वा मि नि ति नः ॥ स त्वा त्व न न त्वं कृ वि वृ षा वा ध न ड न ॥ द रु स मृ व नि रु सा

६

द्ववर्गनिनिगयन ॥ एतन्मस्यासीनिवृत्तस्य एतन्निनिगयन ॥ एतन्निनिगयन ॥ एतन्निनिगयन ॥
द्वित्याः ॥ अथवा कृष्णादिमात्तानां एतन्मस्यासीनिवृत्तस्य एतन्निनिगयन ॥ एतन्निनिगयन ॥ एतन्निनिगयन ॥
गिनामिनामप्यहविहवन्दर्गयनियनः ॥ २३ कोमिदूहिमावनतकिचयकथन ॥ २३ नानुसर्वसत्तानां ॥ २३
कोमिनामप्यहविहवन्दर्गयनियनः ॥ २३ कोमिदूहिमावनतकिचयकथन ॥ २३ नानुसर्वसत्तानां ॥ २३
स्यन्मस्यासीनिवृत्तस्य एतन्निनिगयन ॥ एतन्निनिगयन ॥ एतन्निनिगयन ॥ एतन्निनिगयन ॥

११

तस्यः स्यात्तन्मस्यासीनिवृत्तस्य एतन्निनिगयन ॥ एतन्निनिगयन ॥ एतन्निनिगयन ॥ एतन्निनिगयन ॥
विनर्त्तान्मिनिगयन ॥ एतन्निनिगयन ॥ एतन्निनिगयन ॥ एतन्निनिगयन ॥
अथवा कृष्णादिमात्तानां एतन्मस्यासीनिवृत्तस्य एतन्निनिगयन ॥ एतन्निनिगयन ॥ एतन्निनिगयन ॥
द्वित्याः ॥ अथवा कृष्णादिमात्तानां एतन्मस्यासीनिवृत्तस्य एतन्निनिगयन ॥ एतन्निनिगयन ॥ एतन्निनिगयन ॥
एतन्निनिगयन ॥ एतन्निनिगयन ॥ एतन्निनिगयन ॥ एतन्निनिगयन ॥

हृदयपञ्चवर्णेषु पञ्चवर्णसमायुक्तमकवर्णमुक्तकालिनं अनुकनेकवर्णनयस्मद्दानतज्जन ॥ चकविज
 म्मन्ननवालावनाकरधनमुखा ॥ मारुगुरुनयवाञ्छावर्णविशग्यवर्णयवाविजनयान्न ॥ किंवि
 दूषउसंघाफवर्णकुरुवदूधन ॥ सिद्धिगंडुयदिद्वानिचर्ययाधनयावन्न ॥ वावकाविभलाकिन्न
 योवनमोहिना ॥ नालायमाम्मांस्वाविधिजंकयावमीवजकन्यामिमागुरुवर्णकुरुयदिधन ॥ वज
 कृताशवान् ॥ स्वयदवनायंकृतनक्रियन ॥ अथवाचनकृताहर्वा ॥ वाधिविजंनिऊपनसस्कनांशक

यदिगोनंगायन ॥ अनुक्रियेन ॥ अथवाचनकृताहर्वा ॥ वाधिविजंनि अनन्दाहर्दिवजान्चिनः चरा
 यद्यानिन्दासमूहन्ननयनमाकुरुना ॥ नदिद्वजपदनाचकुरुनयागीसदिनः ॥ अकारयद्यकुरुयममि
 नांरंकुलाममकः ॥ २ त्वगः कुरुनालायांरुस्वाचनसुना ॥ मरवलायांरुनामयः ॥ यद्यवद्याकुरुपिनी ॥ जम
 रूकापाययागावविशुद्धिनः मनुविगुजासि ॥ नागीनानरुनालावनासुना ॥ नस्मान्गावकुरुनयागीस
 दासदा ॥ रुजिमयं नुरुषययाउयंविनिनयनां ॥ जयमरुन्नवाधनृजालनंस्सदारवन् ॥ वीर्यकन

五

रुनामूकानमग्रहं हवया इयन् ॥ यश्च वृद्धकया लानिधरुयं यागचर्यया ॥ यश्च गुलकया लवधुं कत्वा मूकत्वा
धियन सदा ॥ कचजयदिवदोचय ह्यायस्वराव नूना रश्मिक गयी विप्रं च यागी विरहि चर्यया ॥ जायं गमन
का गदं प्रहस्वदाङ्गलवना ॥ नायं लव्यं हवद नद्वज कया लचर्यया लाहं माहं हयं का धं का जकार्यं विविवर्ज
यन् ॥ निजमात्मानं मूर्खं चर्यया कियन नगंगया ॥ गवीरं दानं दत्वा यश्च चर्यया सिमा रवन् ॥ सगरागविचार
मनस्मादानं नदियन् ॥ हज्जलजं गथाया गीयथा प्रफंडं हज्जयन् ॥ ग्रहमन्त्रनकरुयं ॥ सा निधुविकल्पि

73

न॥ ह॥ ह॥ ह॥ विचार उपपाप न॥ येव च गम्या गम्य न॥ अ॥ वि॥ क॥ ल॥ न॥ व॥ का॥ य॥ न॥ सि॥ द्धि॥ त॥ द्वा॥ पियः॥ नि॥
षा॥ सम्य॥ ग॥ न॥ा॥ व॥ र॥ स॥ क॥॥ अ॥ र॥ व॥ द्वा॥ नि॥ गु॥ री॥ स॥ द्वाः॥ वी॥ द्या॥ ल्या॥ स॥ द्धु॥ न॥॥ गि॥ डा॥ दि॥ अ॥ वि॥ नि॥ मू॥ का॥ त॥ र्ज॥ का॥ र्थ॥
न॥ येव च॥ स॥ र्व॥ ल॥ व॥ ल॥ व॥ न॥ वि॥ च॥ व॥ धा॥ गि॥ म॥ हा॥ क॥ य॥॥ ह॥ म॥ या॥ न॥ पा॥ नि॥ ना॥ म॥ लु॥ ध्वा॥ न॥ वि॥ व॥ र्जि॥ नः॥॥ स॥ म॥ य॥ स॥ व॥
वि॥ नि॥ मू॥ का॥ व॥ र्था॥ कू॥ न॥ स॥ या॥ ग॥ व॥ न॥॥ अ॥ कू॥ उ॥ ल्या॥ पिया॥ दे॥ ल॥॥ पू॥ र॥ ना॥ र॥ व॥ नि॥ नि॥ शि॥ नं॥॥ ह॥ य॥ न॥ लु॥ न॥ कू॥ धी॥ न॥ सिः॥
ह॥ य॥ न॥ प॥ र्थ॥ न॥॥ क॥ रू॥ धा॥ पी॥ य॥ न॥ नि॥ र्थ॥ स॥ र्व॥ स॥ त्वा॥ र्थ॥ द्धु॥ न॥॥ या॥ ग॥ या॥ न॥ र॥ ना॥ या॥ गी॥ ना॥ न॥ या॥ न॥ न॥ म॥ र्ज॥ न॥॥ च॥ र्था॥

पटलः ४४ ॥ अथ यथापटलं वाष्पमः ॥ यत्र विहस्यन्त्या गच्छन्ति नो जयिनः संशयः ॥ अकाङ्क्षितः
 दर्शयन्मुञ्जगन्मिच्छन्तं हवन्ति ॥ अस्मात्सुखागमो हवन्ति ॥ अस्मात्सुखागमो हवन्ति ॥ अस्मात्सुखागमो हवन्ति ॥ अस्मात्सुखागमो हवन्ति ॥
 मिका नु यादद्यादद्यात्सुखं निष्ठिकां मध्यामादर्शयन्मुदद्यात्सुखं दशिकां ॥ अनामिकां कादर्शयन्मुदद्यात्
 वानस्य प्रदर्शयन् ॥ पटिर्ददर्शयन्मुदद्यात्सुखं नस्याः प्रदर्शयन् ॥ हृक्पदीदर्शयन्मुदद्यात्सुखं नस्याः प्रदर्शयन् ॥
 मुञ्जामान्नस्याः प्रदर्शयन् ॥ मदिनीयर्शयन्मुदद्यात्सुखं नस्याः प्रदर्शयन् ॥ हृक्पदीदर्शयन्मुदद्यात्सुखं नस्याः प्रदर्शयन् ॥

धायन् ॥ तत्ताटं दर्शयन्मुदद्यात्सुखं नस्याः प्रदर्शयन् ॥ यादनादर्शयन्मुदद्यात्सुखं नस्याः प्रदर्शयन् ॥ मुञ्जामान्नस्याः प्रदर्शयन् ॥
 यन्समयन ॥ तदन्तिगन्त्यागिनी अक्षपूयसाधूमहाकृपा ॥ यादिमात्ताहर्षं दर्शयन्ति ॥ ननुमिर्तिगन्त्याः
 मिमिकथयन्ति ॥ मात्ताहर्षः प्रसिमां कृत्वा समयानि हसन्ति ॥ वाक्किमन्नुमयायादिवाग्वचनमात्रेण
 या ॥ हृज्जन्तुमयायां यदन्तिगन्त्यागिनी सखी कलया ॥ वज्रगर्जतवाच ॥ हृज्जन्तुमयायां यदन्तिगन्त्यागिनी सखी कलया ॥
 रगवान् ॥ पी० रक्षयपी० ॥ अन्तः ॥ अथ यथापटलं वाष्पमः ॥ यत्र विहस्यन्त्या गच्छन्ति नो जयिनः संशयः ॥ अकाङ्क्षितः

ह

पारशायणोत्तरवेवाग्भसानापग्भानमवचा॥ वनादादभलमयः॥ दभलमिभगनायप्रतिरन्योनकथा
न॥ वज्रगर्हउवाच॥ हलगवनुकनपीभदयः॥ हगवानाह॥ यो० जालचयारखानंमाधियानंनयेवचा॥
यो० पार्श्वगिरिः केवकामयुगंनयेवचा॥ उपयो० मातवंपाकंसिन्धुनगरमवचा॥ ऊर्ध्वंमूर्ध्निखानऊ
र्ध्वंकायूपाटकं॥ दविकानंनथाऊर्ध्वंकर्मासपानकं॥ उपऊर्ध्वं कूलनापाकं ऊर्ध्वदंवनयेवचा॥ अ
दावलिदिमादिस्वउपऊर्ध्वंदिमजिपान्॥ चडाहहृदिकलक्षलवभसागवधजं॥ लम्पाकंकाक्षिकंवेव

१७

सोमकृष्णयेवचा॥ कालिकमूयट्टाहंदापंचामिकुशसिर्मा॥ काकवंवापट्टाहंसमासनानिधियगा॥
पारवंशामानंर्यपारवंनगरस्यचा॥ चरित्रंकागलंचवविन्याकोमारपरिका॥ उपपारवंनत्सनिवर्गवज्र
हंमाहाकृपाग्भानपुनसंदानंसग्भानंवादमध्यस्तं॥ उद्यानंवापिकागिरमूयग्भानंनिगद्यनदि
वसंचवपुवकाभियगिनीनासमलकं॥ हवजयागिनीमलुसर्वसत्त्वार्थदुर्तना॥ वज्रगर्हउवाच॥ हलग
वानुकनदिवासाः॥ हगवानाह॥ पुनपऊचउदग्भामद्वय्याश्चनयेवचा॥ ध्वजंमृदुहृत्स्वस्वस्वावर्कश्च

हजयन् ॥ कृपामृत्पाद्ययन्नमावर्गं विभुः ॥ कृपादिना न सिध्यन्ति न स्मात्कृत्तममृत्पादयन् ॥ इच्छाव
 नावहसिद्धिविधिहृष्या नृपसिद्धिनि ॥ ननु नवं मन्त्रादिनमुरगवानवजी न कं पृष्टव रक्षन् ॥ नाकार्यं
 विद्यन किंकि नारुर्जं विद्यन सदा ॥ नाविस्थविद्यन कृत्तं नावा नययत्तु गुरुं ॥ यथामतिनय सत्त्व नयम
 निग्रहं यथा ॥ नृनि सविस्तरा गमत्तानादि मावहन् ॥ यावन्नाऽगविस्तराः ववसः प्रसन्नानिवा ना
 नाम नृपुडाः स्युः घ्राह्य कपदी हिन ॥ आकारमद्वयं हान हकात्र निरुत्वादिभु नयना ॥ नृकाशयनं यद

ककात्र निरुत्वादिभु नयना ॥ यथायथा अजन्तं सिद्धि न नयानवद्वेष्टा ॥ मनस्सावमयानि ॥ वज्रकपासयाग
 नः ॥ च्छमापटलः समो फमथा ॥ अथ यागिना वक्रया द्वास्या मः ॥ स्वधमो रगवं ध्यात्वा मध्यकूची नरावना
 वज्रं पृथ्वीयथाना यंदव नाना रथादयं ॥ धर्मादयो ह्रवं वक्रं द्विपूटं मुहूर्तिं च कं ऊना जलं पूर्व यथाना यंदव नरा
 मः ॥ दव नाना मलवायू लवकश्च यथादयं ॥ धर्मादयो ह्रवं वक्रं द्विपूटं मुहूर्तिं च कं ऊना जलं पूर्व यथाना यंदव नरा
 कालनायवं चूर्णं ॥ नृत्तमस्थवि नयन् नृकं यद्वदभसनात्मकं ॥ नृत्तापीवरवच्चन्द्रचन्द्रापीवि विद्वत्कं ॥ यः

पञ्चमार्तुमाक्रान्तं दयार्मतामहस्तुर्वारिणां लिख्युः प्रयत्नकाक्षिप्रयत्नरास्त्रवः चन्द्रार्थादयार्मता
 नृलोकायानिपुकीर्तनाशा आदर्शस्तनवांश्चन्द्रः समनावास्तुसफिकः विजेधिरः स्वदवस्तुपुत्र
 वज्रममृशनासवेवकमन्नरुनं विम्वनिषाहिविधुद्विधर्मना आकाशरावययः कविधनेः कठिनव
 चः आलिकालिसमयागभवजस्तुसविस्तरः अजनाहवीपिधुसुहृदकाशनचयनस्तुविम्वस
 मूदूनं मधुतर्गविरावयनः पूर्ववच्चक्रविक्राधश्चन्द्रकानामनियुतः एव सर्वकनिषात्राः प्रहृष्टा

यस्तुलवगुणायस्तिकान्प्रायमिचन्द्रार्कस्तुपुत्रदनाम् एवार्थास्त्रवस्तुद्विधुदं पत्रकं पत्रकं भूत्वा
 सपुटनावटारिणावपक्षयागिनाः पक्षस्तुचस्तुलवनरावययागविसदाः ॐ च वजोयम
 लम्बावारुष्माविविद्यामिनाः कोवशवजदाकिचमध्वनरासयागिनाः वाक्पुटपूनः एवार्था
 शिवहालाद्यस्तुपुत्रस्तुनयामववीवगुणनिचोवजुष्माजाम्बिनीमना अथवस्तुः इवमिववस्तुः
 शत्रुवशासदाः हवीनिर्वीनस्तुलवनारिणावमोदिदवमिः सदावस्तुः रुद्रवर्मास्तुलवायक्षम्

जविहविनाशाऽनकवकुः२ककाशाऽकलिकपात्तानाविमोकरो॥यकीकुरुलकणुवहसुचकमखलं॥यथ
 मूजाविशुद्धावयश्चननुदमुडकाशाऽसर्वाऽनुनादभरणाभायथनेयत्तयागिनी॥कपात्तककवयमदिकिन
 कलिध्विकारवर्णागवेववामनआवचमीवनाकीट॥नयात्रुहकलदीफादिउजापिइलामुद्धजां॥नथ
 मानादिवटदावाभांकलिउंकहकासिना॥लवागवविकल्यस्यमित्रसापदराजनं॥२कंचतुमावाभांवी
 यनसिद्धिहमव॥खवाइगुन्यनाकात्तः२सर्वापापयनकालिर्न॥नुमनखवयचकलजसिद्धिमवापूयात्त

१८

यथमखवयदह्लादिमायत्रकीविलवयत्त॥हनायखवयत्तमांवतुर्धहविनकंनथा॥पंश्चमनीलवर्णुचि
 वसुमनुदुदहिकावउदुलवययागीविरमानंपूनः॥नथक्रमउत्पलिकंवेवउत्पन्नक्रममवच॥क्रम
 दयसमाश्रितवकिष्मधर्मदमनाउत्पलिलगंकथिनउत्पन्नकथयाम्यहं॥खधर्मविधियद्वषुहानंर
 वमिभिल्लनं॥खवननिसमापलिलसखंचक्रमयान॥यथानार्यखसंवर्धवाधिचिहंउदयना॥यथदयंर
 वदुर्धविधिंरुर्जननः॥याधिमावहवत्पुहउपायःपूरुषःस्मनः॥यश्चदनयावविधिंविमिसं

٦٣

मानन्दमात्रसहजमहिविवर्जिनीं विद्यात्मनविशगल्लमध्वमानायतल्लन ॥ नात्रप्रह्वनचापायः
सम्यक् नत्वा न्नवोधनः ॥ नान्यनकथमसहजं नकस्मिन्नपितल्लन ॥ आत्मना ह्यनयुक्तगुणयदस्मा
पसवयो ॥ हीनमध्वत्कल्लन्यानि यानि नानि वा सर्वानि समानी निडदुर्वान्तल्लन ॥ हीनसूत्रप
कार्यकुञ्जकृन्तवमूचन ॥ मध्वमवर्जिनं द्वालीमन्यानि निषेउद्वियं ॥ स्तिन्नचलयानि नानि निषेना
निनेवाहं ॥ समानितुल्यवष्टानि समप्रसंस्तल्लन ॥ समउल्यमित्युक्तं मस्यवकाशः ॥ स्तनः ॥ स

मन्त्रसत्त्वकलावत्त्वं ननु यन्नरुन्मनामरुवादि जगत्सर्वमरुवदुवनग्रयं ॥ मन्त्रवापि नमिदं सर्वं नान्यमयं दृश्यं
 जगत् ॥ त्रयं सत्त्वा तु यथा गिया मन्त्रासा समादि नः ॥ स सिद्धिनि न सं दहामन्दपूष्पायिमानवः ॥ खानयानन
 यास्मान् जाग्रुः स्फा विवि नयन ॥ सा नत्वं तु न नाया निमहा मूढा हि कां ऊकः ॥ खयन हि जगत्सर्वं
 मनसा यास्मान् खयन ॥ सर्व धर्म पालि ह्यनं खयनानेव खयना ॥ ह्येन वलाचय खयन ह्यन गुल्लत नाद
 यः ॥ खयन खयन पदं नत्वं मन्त्रावस्वरूपकं ॥ न यो मन्त्रं पदं नास्ति स सं वा द्यं मन्त्रसर्वं ॥ स सं वदा ह्यव सिद्धिः

२०

स सं वदा हि खयना ॥ स सं वदा मयं कर्म वा धनं कर्म जायन ॥ स यं दृक् स यं कर्त्तुं स यं य जा स यं पु उः ॥ यग
 द्रव्यं न यं वषां मादमानं न यं वचा ॥ सर्व नि न त्य द न म्य कलाना य नि धा उ मां ॥ धर्मा दया ह्यं ह्यनं ख स मं सा
 पाया विनां ॥ त्रैलोक्य मन्त्रा नादि पु ह्याया खयन नः ॥ शुक्रा का वा ह्य व ह्य ग वान् न स र्वं का मि ना स र्वं ॥ त्रैलोक्य
 क विद्या लो सा र्वं ऊ भ द का य वा र्गि नः ॥ स र्वं वि द्या मि दं ह्यनं वा क था नि न र्ग म च र्ग ॥ अ धि ह्यनं का मा क स ॥ स
 र्व ह्य ह्यनं न म यं ॥ ए धि वि आ प च वा र्ग म न ऊ का स म व च ॥ ऊ भ न् सर्व नि वा र्ग मी स प दं वि नि द्य द नं ॥

ह

सर्वमयं यथा मासे च वृत्तिरुहवकुम्भात् ॥ स्वयं च रागविकस्य न वाधिविहं नैव सकम् ॥ समस्तवद ॥
सिद्धान्त ॥ कर्मसंयमसंयमादिरिक्त्या ॥ सिद्धिर्न स्यादुवदुष्टा पुन ऊन्मद्वान्न ॥ न च न विना सिद्धि
विदुला कपय ॥ न ह्यनं यन रुवदं रमानस्य परिग्रम ॥ न दिग्ग्रा यवाहन दायका निप्रद्वन ॥ स
न न न त्रया गन स्रव यमदा यन ॥ न्निमिया गिना वक्रानाममदा या गिनिना मलायक पद सा ॥ सुमः
॥ ॥ अन्तः परी विगृह्यि यद्वया स्या स्याम ॥ सर्वेषां तत्त्वसु ना विगृह्यि स्य गाम्ना ॥ यश्च द के क रुद

२१

न दव नाना तु कथन ॥ यथा विरयं यश्च स चं यय न नं यश्च मदा र्ग सला यन विगृह्य ॥ अह न ह ले ग व
नं विरगा र्धन ॥ स्वसं व द्यात्मिका गुह्यि नान गुह्या विमूचन ॥ विषयानं गुह्य रा वला न्म स सं व दं यं सर्वं ॥
रूप विषयादि यय न्प्रनि ल सं न हिया गिना ॥ सर्वे न गुह्य रा वा हिय स्या द्ध्व मयं जगन् ॥ ह र ग व न्क
न विगृह्य ॥ ह म वा ना ह ॥ रूपा दय ॥ क स्मा न्ग्रह ग्रह क ला व न ॥ व ज ग ह्नि आ ह ॥ क न ग्रहा का ग्रह क
जि ॥ ह ग वा ना ह ॥ व रुषा गृह न रूयं ग दं क र्मु न भुय न ॥ ग न्ध ना सिका या चानि जि का या स्या द न विदुः ॥

कायनस्य जनव नुमनः ४४ त्वादिमापूबसविन द्या ॐ मस यानि विषी कृत्तु गुडि नशा प्रयस्क द्वि व व शाले
 आवदनायास्मासं ह्यावा गोया गोना सस्का व व जना कि ना वि ह न स च य म सि ना न व स म या गि नी ॥ अ
 सप्रु स दा का सां वि शु जा वे सि ध म न त य या गि नि ॥ अ म न्यां पु र्क सी र वा ना अ म न व शी य का र्दि ना न म स स
 स य व म सा वा य य अ मि ना सि ना ॥ प धा वा कृ य ट व कृ अ य र म या दि या गि नि ॥ ॐ नु र गो य म शी व
 वा वा वा न दि गि ॥ को व य य म शी व व नू र म स व शी र ना ॥ उ ड र व व शी य का उ र दि क म व कृ न श र व नि व

म स र व न सि ना व ना दि द व नी ॥ अ य गो यी स मा र वा ना ॥ म द वा शी य का र्दि ना ॥ व ना शी ग म र वा व स य स म दि य
 का र्दि ना ॥ स य र व न र वा ना र व व शी ध र्म धा तु न शा स दा का सां वि द्या तु सि ध म न त य या गि न ॥ उ जा नं सु य ना
 वि शु डि म य म मा र वि शु ह न ॥ स र वा म कृ वि म अ न नु गु डि सि वा कि म र्थि वि य कृ सी र वा ना ॥ अ य म अ तु ४४
 व शी र ना ॥ न उ म्भ म्भ सि ना ह्या वा य अ वि य का र्दि ना ॥ द वा र वा ना दि ना व डि र म व वा त य या गि ना ॥ ॐ र वा व
 कृ जा कि ना व प धु ना गु फ र म शी का ॥ मा ह व जा न म र वा ना द वा दि ना नु र म ध न ॥ व न न र म म न स च म य कि

जगत्संलोककोनदहमो॥ अन्तानियानि कानिचिद्विहृतं पंचपूरुषं पूजानिमित्तं॥ आत्माजिवंसत्तत्र का
 पद्ममवच॥ सर्वलोकसाक्षात्सोमयाद्रूपिवसिद्धिः॥ यथमानन्दमायानुपमानन्द-तुद्विर्लोकः॥ यन्म
 यं विनश्यत्तु यं सहजसूत्रं॥ एवं सत्त्वाद्युवसर्ववद्गतावयावृक्षाः॥ यन्मविस्मयमापन्नामूर्तिनाः
 यमिनाञ्जुवना॥ यथमानन्दजगद्द्वयं यन्मानन्दजगत्तथा॥ विरमानन्दजगद्वेन विद्यन्मसहजं विद्युः॥
 ॐ निरुगदनाह॥ हवजस्य ध्वनिविद्युदशांसं स्यापनयं दिवं वज्रगर्भस्य वाधयाननात्मन विरा

२४

मन्मथमानापलखन॥ प्रयाणां वज्रनादवसहजः संवाधिपूरुषात्॥ अथवा सर्वोत्तमास्वायवा सर्वविव
 र्जितः॥ विरमानन्दोत्तमयुक्तानन्दप्रयवर्जितः॥ यथममववर्तमानिसिद्धार्हमायाद्देववत्॥ सहसा स्वयं
 हानिस्वयि जाग्रदहतिवत्॥ अहदलज्जामिधो मूढायांगतुसिद्धिनि॥ ॐ ह्यहमनुत्तमास्वावतुस्कार्ण
 समूर्जितां चतुर्द्वारं महादिक्कहावाह्यहावर्षिर्गो॥ भावेन चामवेयुर्कञ्जसुसुखात्मिनि॥ वज्रसंज्ञमाय
 कं नानापूर्णापत्तिर्नाध्वपेदिपं नथगन्धमसुकलभारिपूनां नपल्लवाग्रहवत्पुच्छदिनकन्धराशापंच

६

मन्त्रपिडिका दद्यान् विजयकरपूर्वमशानव नमूनि युक्त नस्यमान्यन वावृणा ॥ सुप्रनस्ययपाह ॥ सुप्रन
वग्नयमशाचक्रास्यजपूत्रजमागुल्यस्यन भयुर्नार्थीकनवमकुन ॥ समधयचरदोवधशावलिभुदाप
यग्नमयुगकावादिमनुमशा नर्जीववयथदृष्टीयथधनन यप्रवा ॥ एकसिनाभुयसकाविधिवदद्या
नस्यमधुसपूजावाच्यनानवयथार्यानामथप्रवा ॥ गुह्यं द्विपूर्वलिखचक्रं ॥ अर्थादिनां लिखतु नश
पूर्वमलिखकरिदं किं हयविमनथा ॥ उरुप्रशिका ॥ भवनेमयवायुयनथा ॥ प्रेम्भनवनथकथि

२७

नं सुखउर्वनथा ॥ वज्रसूत्रकनादापः ॥ नमोस्तोठपादयाशा ॥ पवित्रात्मगुलानार्थीदिउज्ज्वलजः
यागनशास्त्रानः ॥ गुविः ॥ सुगला ॥ अविचित्रारुमदधिनशा ॥ श्रीरुंकारकनादापाहाहाकासहयान
कशापभहलंसमाख्यानीविगुह्यं हनदूयिर्षा ॥ संसारववदानननास्मिहदामनागपि ॥ परमं
मोनवरुयनरावकनचविग्रहनवग्रामनशरुकः ॥ सीस ॥ अक्षिनविद्युनमूर्धनचक्षुमाहन ॥ मोच
पविर्षा ॥ रागमदधनमाहन ॥ ॐ ॥ नचयगुन्यनचमाननदृष्टं ॥ रावनरावकमिधनमधुनिरुव

६

इमं रुजा त्वा विविदि ॥ ॐ स्वा विज ग रा त्वा ॥ ह र ग व न क स्मा न् रु का म कं ह व न् ॥ द हं स र त्वा व न ॥ गु ह्म मा
 दा व वा त्वा व कं ॥ ग रा ह र ग व न व जा दा कि नि नां स र्वा द द ॥ नि स र्वा द स र्वा त्वा स र्वा द ह र व
 सि न ॥ ह र ग न क र्म न्मा ह र नि क ॥ ॐ ॥ ह र ग व न्मा वा त्वा क क स या र ग न स र्वा न का ठि न
 ध र्म नि र्दि यि वा न्मा ज्ञ य न्मा वा वि वि वि वा वा का दा द वा न्मा त्वा र्वा ॥ न जा जा य न्मा य र्म ग मा न्मा
 य र्म नि र्दि न ॥ सो र्वा मा का ग वा डु य र्म ॥ ॐ ॥ प वि वि वि न ॥ न स्मा सो र्वा न्मा त्वा र्वा म हा र्म य

२७

नं स र्वा ॥ स हा जा त्वा य द्वा नं स र्वा न्मा वि वि वि नं ॥ स र्वा नं स र्वा न्मा वि वि वि नं ॥ स र्वा न्मा वि वि वि नं ॥ स र्वा न्मा वि वि वि नं ॥
 ग म्मा दा ह र वि वा ग न ॥ गु न्मा क र्म न्मा वि वि वि नं ॥ न म्मा जा य न्मा न्मा म्मा य र्म न्मा य र्म न्मा य र्म न्मा य र्म न्मा
 स म्मा ज्ञ य ॥ स म्मा य ॥ स म्मा म्मा य र्म न्मा य र्म न्मा य र्म न्मा य र्म न्मा य र्म न्मा य र्म न्मा य र्म न्मा य र्म न्मा
 स म्मा क र्म न्मा दा व वा न ना क र्म न्मा दा व वा न ना क र्म न्मा दा व वा न ना क र्म न्मा दा व वा न ना क र्म न्मा दा व वा न ना क र्म न्मा
 र्म न्मा दा व वा न ना क र्म न्मा दा व वा न ना क र्म न्मा दा व वा न ना क र्म न्मा दा व वा न ना क र्म न्मा दा व वा न ना क र्म न्मा दा व वा न ना क र्म न्मा

ह

रुद्रकनसत्वार्यश्रीमिनसिद्धिहिनारवा॥ अग्नावाहनमयां त्वंदीवसाकिरुनासिहवजकाधयुडिमा॥ ननायन
धवाधपिअमृफामहंयुतंसिदया॥ सार्थवेवपरायधसाधिनंगदुहवयुका॥ अगमिषसियधकाससवसिदि
कृतयमा॥ अग्निसन्नायममन्त्रा॥ उं ऊं हूं वं हां खं दं॥ अर्धमन्त्रा॥ उं ना शी हूं खं पा य मन्त्रा॥ धं धं॥ नेवयम
न्त्रा॥ हामनिर्घृयपनिष्ठापटलायथम॥ ॥ यथवजगर्हज्जुह॥ गगनवनसर्वधर्मसुसागप्रतुं विकायथा॥ स
लोकयसिध्दिसिद्धदवनयन॥ लगवानाह॥ नेवात्मायागयुक्तामा॥ मृथवाधोहृदयगगनधा॥ उभमयमविर्तुः

२६

सन्निवृत्तिसिद्धिकां उकशाप्रथमस्यासकालस्यरुनं वं कसोनं गुहं॥ यग्रुः सिध्दमन्त्रा॥ नकचितः स
मादिनशास्त्ररुपुनिसाकालसिध्दामिदिवानसा॥ एवययागिनीपाश्चात्थवाधोहृदकाठनिं॥ अर्धिप
जात्यन॥ उं ऊं नामनयुगं हृदयन॥ वन्दनेहसंमदयन्कोपिनेच्छदयकटिमुनिः सवलायन॥ लावांग
दुर्गिष्टं यनहसन॥ एववनांसकयनेपाश्चात्थयागिनीलावयननाउभमयनययनअविद्यादुष्टवनसा॥ न
रुद्रकनवचयेमासिद्धिर्धसिद्धिकां उं निशावजगर्हमयागानं॥ नानाकालिषनासन॥ सिध्दयुकाउकनः

ह

विजयमकं यशः ॥ सर्वविनां पवित्रं दधनं मूर्तिवत् ॥ दिनमकमिव दिव्यं लवयित्वा पवित्रं यथा ॥
 नान्यायां मित्रं सा ॥ स्वयं यथार्थं प्रसिद्धं ॥ सकृदपि न विद्यासदा ॥ एतयकारिणो ॥ हयान्मादस्तथा ॥
 खेत्तमकपाजयुडवः ॥ रागद्वयमहामादाः ॥ साधकानेव क्रिष्णं ॥ पूर्वविमृश्यमाना वै हि मादि नरुत्तारिणः ॥
 कथं न कुलमस्य के योगिनः ॥ सन्निभो व ॥ पञ्चमनन्यकारिणो विप्रसिद्धं च न गच्छय ॥ अपि तु यजमहानाय
 मूलाः ॥ कुरु कर्मिणः ॥ कुरुपाविकस्वयं गच्छसिद्धं नयिचिह्नं ॥ दर्शनं सदा लोको वतु नरुत्तारिणः ॥

३०

मानकाधविनिर्मुक्तः ॥ समाविशेधनं कुर्वं ॥ सागत्वात्तासया एनसिद्धिः ॥ समादिनः ॥ मासमकं चरुः ॥
 पंथावन्मुदानसह ॥ आदर्शनं लयनं मन्त्रियोगिनिहोदिगधनं ॥ श्रुत्वा अमूर्तिं मूर्तां सत्त्वार्थं कुरुवज्र
 चक्रं ॥ माध्यायविभासाजीवयजीवनमभिरुगां ॥ सकृदप्यसंयुक्तावाधिविह न सस्यं नृदमक्रमलोदाः ॥
 लयनं स्यां धर्मप्रकाशयन् ॥ दधनं नृपविह न समयवकं विह न ॥ मासमकं नरुत्तारिणः ॥ सदा वतु नरुत्तारिणः ॥
 वरुत्तारिणः ॥ नानासर्वसंकल्पवर्जितं ॥ अथवा च लनः ॥ यस्मात् कुरु मूर्तापत्ययन् ॥ दवा सव न नृपया

मवनिर्वाणविष्णुकाकायमसा॥कवयागपनु जानमायवसि॥नं॥हुउमूखंवरुसंरुनाकिउपाकिन
वासना॥यनवविषयवमुभिसिरींनसर्वजंनवधाननेवविषयत्वह्यविषयकाटयनविषय॥यथातानशुद
नस्यमाधरुंयदायन॥कननरुनमकनरेपशमाधिकत्यनान॥रुवमुदाहवनेवविकल्पयनिकत्य
नशाकुरुनाययथाविषयमिनार्यनरुयन॥नयसवाविकल्पयिंआकावशमपुनरुययथावकद
मथसिद्धमवदिनापूनशाकयममिदममथसिद्धममगवदिना॥यनरुनरेवधनजमवागद

३३

कर्मभासापायनउननेवमूयनरुवंधनान॥शलगवधनसाकाशालेवविमूयन॥विपशनरुवनाक
षानरुनायुधमिधिकशाकुरुद्रमूरुवत्यक्षयक्षरुमस्यपुनशाकुरुवमरुननदःपक्षनायनिरुदिना॥
वायककासयागनस्यभाकाकाठिन्यधर्मनाकाठिनस्यमादधर्मसासावराचनमनशावाधिसिद्ध
वयस्यादवमवाउकममशाआपाऊनेत्यरुपलादयाश्चात्यनायकं॥व्याशमावसिद्धिःसादमाद्ययुसं
रुव॥सुखंमंगरुवदकंरुकिकागलजम॥आकागंयिनुनशवर्जिसासिगुनमाकागसंरुव॥उकवमरु

ह

यापिदुःकमदहः कयवदावदावा अहसदीशः अथसर्वयागिना हगव नमवमाहः कय नमविषयाः का
नाडियागिना किमानियननेक नमः कय नमः अमवः अथकिं सारवं ॥ हगवाना दाः पविषया
ः अथैव दः सर्मसः यववा ॥ अमिदुःकमदहः कयवदावदावा अहसदीशः अथसर्वयागिना हगव नमवमाहः
महजि कामनसुनः अमाहवर्जदिहयुकाः अमदगानाडियागिना विषयविषयितका लाः अमदमाय
ननेरवन्पयः कय नमः अथयुयायाः सः अममहाहयः ॥ अडियाविषयं ववा ॥ अडियविह नमववा

३७

अमवाः अहदः अहवाग्यागिना अवाधयः ॥ अहवनेवायसुयु ननेसलं सवा नथाः उके देव लायमंसर्वयागि
न्यायाननः अहयः अकादः अमयः नियः अयुयुवदहः अयायमः अयुगिना कस्मादग्नीयुयजायनः ॥ अमावः
गिनलाः अहमिदुःकमदहः नमयनीयपुयुवदहः अयायमः अयुगिना कस्मादग्नी सर्वकाव नथाः अयुगिना अमजः ॥ अ
कस्मन्नीयिनाः अहमिदुःकमदहः नमयनीयपुयुवदहः अयायमः अयुगिना कस्मादग्नी सर्वकाव नथाः अयुगिना अमजः ॥ अ
ः अहवनेवायसुयु ननेसलं सवा नथाः उके देव लायमंसर्वयागिना अवाधयः ॥ अहवनेवायसुयु ननेसलं सवा नथाः उके देव लायमंसर्वयागिना

ह

गयनिपिभयनिववजागुनरसं॥ननःयश्चरुगवा-कुसुसनिअधिष्ठानंदर्भरुसंननःयश्चरुग
वा-कुसुसनिअधिष्ठानंदर्भयनि॥रुलावडार्कियाभयागुफंदर्भरुसंननःयश्चरुग
अपुलावनकयाभिभुगुनरुपा॥अपुडत्साहपाफाःसवीदवत्यादिदिपंजानुमधुलंष्टिवायनि
छापनरुगवांसनाजतिपुमस्यरुगवनावराधिमंगुचनि॥रुगवानाह॥रुगवानंनयथापुग
माममनवरुयनासानंमोवनरुवीनअम्यधर्मनवरुयनू॥मउनवरुयदीमान्धननंनवावसमः

३१

यनुनेडाकागंनरुवीननडियाभामिवागं॥रुअगारंवलंसर्वपेक्षवर्गुसमाचरु॥रुमनसर्वयापिना
नुनिर्विर्भकनवनसाभिअसहंनरुवीनदिनद्वयंनअनिच॥नवन्दयदिमानुदवानुकाक्षपाषाभम
यानुसंननंदवनामूलासुवांनेयागिनायका॥अम्वरुधुलवर्माउडिकायनेयभने॥उरुअगारंयस
जायानात्मदहमिवसुभन॥यक्षमनंगुउंमयविषीविम्वयहननं॥असुमधूरकषायादिकूलवचक
उरुसुधुनिस्त्रिउताहृवावाधिविरुनरुअयनू॥नारुअविशनकिविनद्वयहनवनसा॥सयंउ

कसमपापपत्रलाभुनिवशयनाधुमसिंहनकानाभुमिधिरुपिबदना॥कोपानविभवर्ग
 वमृद्येनैवसंनथा॥पुष्पपुकरयपायवंधयनमृद्यजंवरं॥येभूवजगरुज्जु॥ॐ॥दियानीवि
 मुखाविषयंयादुमानिवेभुविःसर्वविषयसुहवावनाकथिनापुगा॥रगवानाद॥नरुधामाहवजि
 डा॥सनायादववजीका॥वालेमासुर्यकाख्यानावकुचगवजीका॥स॥ॐ॥व्यावजीवामनानम
 ल्मयागिनि॥कवचमहिर्महासत्त्व॥ॐ॥दियानीविमुद्रय॥वजगरुडवाचा॥सं॥रुवीकिसूचनर

३८

गवनलवृथानिचिर्न॥यागिनिनातुमहासमयंभवकाधेनीचिदिमं॥हसिनंवेज्जालाभुजालिग्यं॥दकसुधा॥
 नलुभापिचतुर्भुवस॥सुखवन्नान्दिनं॥रगवानाद॥वसुहंवेजगरुगृहत्वामकचनसा॥सं॥रुवीकिसूचनर
 संसमयसंकनविसु॥मदनंमद्यंवलंमीसंमलयजंमीलनंमनं॥गमि॥४॥वटः॥गवः॥अपा॥अस्मरु॥वर्ग॥नि॥२॥रु॥
 आगनिपुखागंयाकंरुपीटंउमत्रमनं॥अरुवीदू॥दूरव्यानंरुवंकालि॥३॥असुभादिभिर्मपाकां॥कपालं॥पद्म
 जनी॥रुकरनिक॥रुयं॥व॥अनं॥नालनी॥वनां॥गु॥थं॥चतु॥समपाकं॥मूर्धकं॥मुलिकां॥सुनासुयं॥मुसिकं॥रुयं॥मु

रु

रुं कर्कशं ममं ॥ महामासं सति जं पाकं पाकं द्वाडिययागं रुद्रं वज्रं तलकं त्वा नं यम कर्कशं ममं ॥ रुद्रं यम
विधायानं वरुणं रुद्रं नरुदिनां ॥ सः ॥ राषमं वरुणं ॥ वृद्धाः यमं कर्कशं ॥ अथ वज्रं रुद्रं त्वा नं ॥ नटी यमं रुद्रं
नया ॥ चतुर्भुजं रुद्रं तलकं वरुणं जामागनामना ॥ वज्रं कर्कशं रुद्रं तलकं वरुणं जामागनामना ॥ असीरुं रुद्रं वरुणं
जं रुद्रं तलकं वरुणं ॥ वज्रं रुद्रं तलकं वरुणं ॥ नसीरुं रुद्रं वरुणं ॥ सः ॥ राषमं वरुणं ॥ वरुणं रुद्रं तलकं
काः रुद्रं वज्रं नवदं रुद्रं तलकं वरुणं ॥ समयं विडा रुद्रं नसीरुं रुद्रं तलकं वरुणं ॥ वरुणं रुद्रं तलकं वरुणं

३२

वादि लिः प्रियम सोयदि वृद्धा पिसः ॥ राषमं नसीरुं रुद्रं तलकं वरुणं ॥ समयं विडा रुद्रं नसीरुं रुद्रं तलकं वरुणं ॥ वरुणं रुद्रं तलकं वरुणं
रुद्रं नसीरुं रुद्रं तलकं वरुणं ॥ वरुणं रुद्रं तलकं वरुणं ॥ वरुणं रुद्रं तलकं वरुणं ॥ वरुणं रुद्रं तलकं वरुणं ॥ वरुणं रुद्रं तलकं वरुणं
मूर्त्त्याः रुद्रं तलकं वरुणं ॥ वरुणं रुद्रं तलकं वरुणं ॥ वरुणं रुद्रं तलकं वरुणं ॥ वरुणं रुद्रं तलकं वरुणं ॥ वरुणं रुद्रं तलकं वरुणं
लायदा त्वा नं गी नं नायं वरुणं ॥ वरुणं रुद्रं तलकं वरुणं ॥ वरुणं रुद्रं तलकं वरुणं ॥ वरुणं रुद्रं तलकं वरुणं ॥ वरुणं रुद्रं तलकं वरुणं
मवरुणं रुद्रं तलकं वरुणं ॥ वरुणं रुद्रं तलकं वरुणं ॥ वरुणं रुद्रं तलकं वरुणं ॥ वरुणं रुद्रं तलकं वरुणं ॥ वरुणं रुद्रं तलकं वरुणं

रु

नरुजगद्वं॥ यककुलंरावा नायागमर्नासिदिनापिसधकः॥ नवासाधवमुदधवजकमाहमुदयागेश
यिमुनमुदमवा॥ शंरागममुदय॥ ॐश्यामुदयाजकिनि॥ युकसांधवमुदिनः॥ भवरीमाहमुदभव
मुशोपिमुनवमुदया॥ अम्विवागमुदधपुन॥ गोशोभदधवमः॥ चोशोमाहमुदभवलीसिपिमुनमुदयाः
धस्मशोशगमुदभववरीमाहमुदिनः॥ खवरीशगमुदधंजानमद्युया॥ अलरादिनगगावजासवि
मायका॥ अलसुनायका॥ गोशोचतुर्थवारियागिनि॥ पंचमवजजकावषमयुक्तिसिस्ना॥ भवरीसफ

४१

मंभवचुलोवाधमं॥ नवमंअम्विनाचवपुन॥ गोसिदियेकका॥ चोशोवकादभात्यानावनासीदादगंम
नी॥ धस्मशोशयादगकंचुदगकंसत्तरी॥ यंकदममंविचर्यायागिनीनानांखवीजकांकलयटलरानाशः
कायिनिद्विवाउमापिका नाअदयदयककायागिन्याः॥ कम॥ गाननाः॥ ललनावसना॥ अवधूनिनेशायागिनि
मना॥ सध॥ गमवांरुअयनाना॥ वाउसिनकलयनः॥ कस्माद्वना॥ अर्थदिया॥ अक॥ भवा॥ वाधिचिरंरुवच
उपेक॥ उसगासका॥ अलिप्रयमेतासोखीयागिन्यासुस्यासका॥ वजगरु॥ अरु॥ कयि॥ रंकि॥ नचो॥ लाकंसधिया

ह

गिनासकवांसहजानउसखवसंशययोवरखगं॥हगबानाह॥मधुलवकायुपायनखाधिक्षनकम
मवावाधिविरुमुपादयवदरेसवहिरुयकांसंरुनंदनंकागंविदुनंरुवदुपिगं॥लीककालगु
खावखावदंकारखदुयक॥रुवसुवकुभादवसखावमीनिमदिनंवृद्वानांवाधिसखांनांआधरंवज
अविर्भा॥उवमवदुससारंनिर्वीनमवचदु॥संसारंननान्यानिर्वीनमिदिकथन॥संसारंरुपमकायाःससा
रंवदनायः॥संसारंमिदियाखवसंसारंदधकादयः॥अमिधम्माभुनिर्वीनमासाससारुपिमधुअमूरुः॥

४२

संसवनरुद्वंसंसारानिर्वनायन॥निर्वारिवाधिविरुंनुनिर्वारिसंरुयकं॥चारवकुंविभलांडीरुययवन
मभुनां॥अमाधीयंकुलानाउसिरुकयूरसकवां॥खारिषिकांरुवजसकभासाधकापियां॥मदनवपायय
कासंखयंववियवदुगणापअदंनूरागयनूडाखययपिसिद्वय॥ककालफवातकंजिपाकूद्रुंरुवना॥
नासिनयागसगुहंनकयूरंनखजवध॥नकरगनमाजकनूकुकिकयानसंखकः॥अमनंजिदयाअकमध
नायवसखव॥कयूरमवननासाखवंननाखरुपिगं॥दससाखंमहामूजासंखिगानाहिसमुल॥अदिस

ह

मकारः स्यान्निर्माणं सुवर्णं मर्माः उत्पद्यन्त्यानि गीयन्तु न न निर्माणं कर्म मर्माः धर्माः धिउत्पद्यन्तु धर्मकार्य
दहवन्तः संहर्गन्तु अं नपाकं वधुवत्सुपि धर्माः कथुसुसुगमहासुखं शिरसि स्थी नः प्रवका प्रवनिषं
विषाकं धर्मवक्तु नः प्रवपंचसुसुगमवन्तः सुखवक्तु नः सुखवक्तु विधायकं निषं कायविहविनां
कर्म सुगवन्तः प्रवक्तु कर्म सुगवन्तः प्रवक्तु कर्म सुगवन्तः प्रवक्तु कर्म सुगवन्तः प्रवक्तु कर्म सुगवन्तः प्रवक्तु
धर्म सुगवन्तः प्रवक्तु कर्म सुगवन्तः प्रवक्तु कर्म सुगवन्तः प्रवक्तु कर्म सुगवन्तः प्रवक्तु कर्म सुगवन्तः प्रवक्तु

४५

सुवर्णं मर्माः सही सही वादधर्मवक्तु धर्मा वा न समुहवः संहिदि संलग्नवक्तु कथुसुसुगमहासुखं शिरसि स्थी नः प्रवका प्रवनिषं
धी सुखवक्तु मर्मा सुखं कथुसुसुगमहासुखं शिरसि स्थी नः प्रवका प्रवनिषं
नो न लायुक्तं विवर्णः उत्पद्यन्त्यानि गीयन्तु न न निर्माणं कर्म मर्माः धर्माः धिउत्पद्यन्तु धर्मकार्य
न न थाः अकारं यागिनि वक्तु सुखं कथुसुसुगमहासुखं शिरसि स्थी नः प्रवका प्रवनिषं
अहिः मर्मा गीहिः सुखा वक्तु प्रवन्तः मर्माः सुखा वक्तु प्रवन्तः मर्माः सुखा वक्तु प्रवन्तः मर्माः सुखा वक्तु प्रवन्तः

ह

नियमधास्वोर्वेदव्यायसुप्रसवानमावृक्षात्तुनःनकुंसाकभउषुकुविनिविहमवहिसंवृक्षाःनउ
दमिनधावमुत्तवमुकायाद्यामादभाअथविहकाः॥नपिहवजमगसिचननाउसंसयधाअहूननाव
नवात्तुमांगनिमजनकाः॥संसनिचनमुत्तवमुकायाद्यामादभाअथविहकाः॥नपिहवजमगसिचननाउसंसयधाअहूननाव
विहमधयानियविषयानलएनकनूरुवावजगहआदायुधिवापुकसायागाकथमजाहमूडममाहयसा
कहूद्वंकायावलावनामनः॥पुकासिमाहमूडमंपुकाभवपलाशाहगवानादाकार्यविहयविनयना

४७

नयत्तुलिर्नहवना॥नस्मादेवावनिविहंकार्यविहनमूडयन्॥वजगहआदायुधिवापुकसायागाकथमजाहमूडममाहयसा
त्यदवपुका॥भवतिअहूद्वंकायावलावनामनः॥पुकासिमाहमूडमंपुकाभवपलाशाहगवानादाकार्यविहयविनयना
सस्माविहंरवामाहमूडयन्॥वजगहआदायुधिवापुकसायागाकथमजाहमूडममाहयसा
चमुत्तानान्यमूडमंपुकाभवपलाशाहगवानादाकार्यविहयविनयना
विहूननमूडयन्॥यस्मान्जीविनिवायुमाघवायुपका॥अविनिअमाघमूडमंपुकाभवपलाशाहग

६

कायवाकिलुद नश अर्धम अमस नं च मध्यवरीरु नां ह व श काय मूलायाय अमर काय व की मो र व
अगम मूडि क उ ड मूला वाग् विज्ञा विरु व जीव न ग म्मा विरु न ग म्मा रू प कं विरु म अम क स नं न ग म्मा
न न म अ ज्ञा कूला निषट् विष्म न्ना रु विरु म्म य का ग य न्ना वि वि धं प श्व वि धं च व क थ न म्म य गि नि न्ना अ ज्ञा
रु व र्वा व न र त्त स रु वा मि ना प र म्मा घा सि धि व क स त्त शा द ष मा द रि य नु न ग मि न्ना म्मा म्मा म्मा न य क म्मा
दि रु वा श वि हा य व क स त्त र्वा य अ त्त अ वि धं कूला न द नू या नि य वि धं मा ह ष ष ग क शा कूला म क रु वि रु स म्मा

४८

द ष र्वा पि नां द ष व क य र्वा य कूला य टं प श्व कं म न्ना ह व क स र्वा न ल मू ड न्ना पि रु र्थ ना म व ड र्थ य ट ल ना ॥
अथ व कि म हा ग ज ह व क ष ष द ष य उ ॥ स र्वा का र र्वा वा त्मा म ह तं स य का ग य न्ना स र्वा व र्वा स मा सी नं स र्वा का
र र्वा य ट श चि लं व क स र्वा ज न नि य ना म ह त्त अ ॥ षा उ म रु ज म ह्म अ व ड र्थ र्वा न कं क र्वा ल मा ल नं
वि र्वा न ग म्मा शि धि क न्वा य अ मू ला ध र्वा द नं ग म्मा र्वा म ह्म य ॥ अ म्म च कं ल य क थि नं प श्व द ग य वि र्वा वि र्वा
ल दि यं म न्द लं का ह कं पा न ह नं म य र्वा र्वा र्वा र्वा उ न ग म्मा अ जि वा व कं क र्वा ल क ॥ म द रि य र्वा ल नू द र्थ म्म

६

लंसंयकागयना...
हंविद्यानत्वयासाध्वनननामहावागमनूगानसहजान...
म्यासमाकानंरयस्यापिरयानकांमृधुमात्ताकनहातंसयसंमाधुवाचिनीविम्वजधमंमूर्धकधुवधुहयानका
हंकारंरयस्यमूवाहस्माध्विनिविग्रहांनिदंघसमापनंनवात्मासहसंपूर्णनिरुद्धंस्वावाफनिरुद्धस्व
पिभांमृतमृत्यमहाहृदकिंमृदसन्नोहंवामवकमहाहमंमूर्धस्वविदवातिनांवदुविंमिननाद्यंमवासा

४५

हगसाधिराशात्वयापुत्रमकिठिनामनिहंनिधिमा...
कानिंमृगापुनःनिमृददकिशुदायवावायविद्यावातककालयागनवकातिनिशमगापुनःनिधिखय
धिमदायनिषधुमात्रहृदनिमहादधसमापकीतिमृगावस्मातिपुनर्वानिमृदउदयवायनिषधुयायत्र
पिमादयाधर्षधसंयागानिंमृगापुकीसिपुनर्वानिमृदनेमनकानर्वानिषधुयायत्रपिमापुनर्मृदयनया
गनमवतिर्यावककाधकाचधुलावाकसाआसार्यामिमात्रककाधकागमावकीमहावागमद्वंरुगंसविद्य

लक्षा ॥ ॐ ॥ ॐ नमो हस्तं वज्रं मधुं नारायणं विष्णुं स्कंदं मातुं दं नमो विनायकं सत्यं ॥ वज्रं वज्रं
 स्नानं मन्त्रं ॥ यद्यपि मूलं अत्र महागुरुत्वं ददतु नन्दनं विष्णुं हस्तं हस्तं कार्यं कुरु ॥ ॐ वज्रं महावज्रं
 नानन्ददायकं वज्रं मूलं कुरु नारायणं हस्तं हस्तं कार्यं त्वमकुरु नमो विष्णुं हस्तं हस्तं कार्यं ॥ ॐ
 मातुं नमो वज्रं माया कल्याणिनी यथा ॥ ॐ ॥ मूलं सति कति कति मम तस्य वनिर्मवति नरातिनं वरः
 विलासिनि विवस्वत कमलं हस्तं ॥ यामहाया विनिगिनि कुरु ॥ मूलं नमो वज्रं मूलं वज्रं मूलं मूलं मूलं

७४

दयाधीनं गुणं कायुक्तं महावज्रं पदं ॥ हस्तं नमो मया गिना जालय ॥ ॐ समाधि मिति ॥ ॐ नमो
 यनया हस्तं सर्वं नमो वज्रं ॥ यनजानि नमो वज्रं सर्वं नमो वज्रं नमो वज्रं नमो वज्रं नमो वज्रं नमो वज्रं
 कुरु ॥ ॐ ॥ ॐ निवृत्तिं कुरु कल्याणं कुरु कल्याणं कुरु कल्याणं कुरु कल्याणं कुरु कल्याणं कुरु कल्याणं
 महानन्दनं वज्रं ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ यद्यपि हस्तं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं
 नमो वज्रं नमो वज्रं ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ गुरुं वज्रं ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ गुरुं वज्रं ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ गुरुं वज्रं ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

आशा सरवधि

2667

ASNA ARCHIVES



